जम्मू-कश्मीर
उम्मीद की किरण

रमेश शर्मा

गांधी शांति प्रतिष्ठान

जम्मू-कश्मीर
उम्मीद की किरण

रमेश शर्मा

गांधी शांति प्रतिष्ठान
नई दिल्ली - 110002

जम्मू-कश्मीर
उम्मीद की किरण

लेखकः
रमेश शर्मा

प्रकाशकः
गांधी शांति प्रतिष्ठान
223, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110 002
फोनः 2323 7491, 2323 7493
फैक्सः 2323 6734
Email: gpf18@rediffmail.com
rameshsharmagpf@yahoo.co.in
rameshsharmagpf@gmail.com

मुद्रकः
सिस्टम्स विज़न
ए-199 ओखला फेज़-1, नई दिल्ली - 100 020
systemsvision@gmail.com

जम्मू-कश्मीर
उम्मीद की किरण

जम्मू कश्मीर के जनसमाज की असुरक्षित, अनिश्चित और एक दायरे में घिरी जिन्दगी के प्रति गांधी शांति प्रतिष्ठान को, नम्र व छोटा सा ही क्यों न हो, अपना फर्ज तो अदा करना ही चाहिए, यह सोच कई वर्षों से प्रतिष्ठान के साथियों, कार्यकर्ताओं में चलता रहा था। जब-जब भी जम्मू कश्मीर विकट स्थितियों में घिरा, एक टोली वहां पहुंची और वहां के विभिन्न लोगों, संगठनों, राजनेताओं, विभिन्न जन समाजों और समाज सेवियों से मिलकर समस्याओं के निदान में गांधीजी की राह से अपनी सलाह, समझ व संवेदना देने का प्रयास करती रही। इससे उस राज्य में हमारे ताल्लुकात भी बढ़े और कुछेक सहमना व्यक्ति, संगठन व समूह भी जुड़े। ऐसी शांति सदभावना टोलियों के द्वारा वहां के समाज के बीच हमारा एक स्थान बनने लगा। 2009 में राष्ट्रीय युवा योजना के अन्तर्गत आयोजित राष्ट्रीय युवा शिविर में भी गांधी शांति प्रतिष्ठान की अध्यक्ष की उपस्थिति से जम्मू-कश्मीर के समाज सेवियों, गण्यमान्य हस्तियों, राजकीय अधिकारियों तथा गांधी विचार आधारित कार्य करने वाले समूहों से निकट सम्पर्क बना।

बार-बार की इन सम्पर्क यात्राओं के बाद दिल्ली में एक छोटी गोष्ठी उन लोगों की हुई जो या तो जम्मू-कश्मीर के निवासी हैं या पहले थे, अब दिल्ली में रहते हैं, परन्तु वहां की शांति व सद्भावना में दिलचस्पी रखते हैं या फिर दिल्ली निवासी जो जम्मू-कश्मीर में शांति की समझ रखते हैं। इस गोष्ठी से यह निकल कर आया कि प्रतिष्ठान जम्मू-कश्मीर में एक शांति केन्द्र प्रारम्भ करे जिससे गांधीजी, अहिंसा, शांति व प्रेम-सद्भाव के विचारों द्वारा वहां के समाज को बल मिले।

इस लम्बी प्रक्रिया में कुछ ऐसे मित्र हमसे जुड़े जो जम्मू-कश्मीर में गांधी विचार के अहिंसा, शांति व सामुदायिक सद्भावना के लिए उत्सुक ही

नहीं बल्कि सक्रियता से समर्पित भी है। इनमें श्री एस.पी. वर्मा, गांधी ग्लोबल फैमिली जम्मू, श्री कस्तूरीलाल बंगोत्रा, गांधी सेवा सेंटर, मेंढर जैसे व्यक्ति शामिल थे। श्री एस.पी. वर्मा ने प्रतिष्ठान द्वारा जम्मू कश्मीर में अपनी पहल स्थापित करने में बहुत गहरी दिलचस्पी ली। 19 अप्रैल से 27 अप्रैल 2010 तक जम्मू क्षेत्र में "शांति व पर्यावरण" के संदेश को लेकर एक सम्पर्क यात्रा करने का तय किया गया। यह पहला कदम था। अगला कदम इसी प्रकार की एक सम्पर्क यात्रा कश्मीर क्षेत्र में की जाय, यह विचार बना है।

इसी कदम के अन्तर्गत दिनांक 19 से 27 अप्रैल 2010 तक सुश्री राधा भट्ट, अध्यक्ष एवं रमेश शर्मा, समन्वयक तत्व प्रचार केन्द्र, गांधी शांति प्रतिष्ठान ने जम्मू क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरे के लिए भी लम्बे समय से मन बना हुआ था मगर किसी न किसी कारण से यह कार्यान्वित नहीं हो पा रहा था। बार-बार दौरे का कार्यक्रम टलता गया। अंत में पक्की तौर पर सुनिश्चित हुआ कि गांधी शांति प्रतिष्ठान की अध्यक्ष एवं तत्व प्रचार केन्द्रों के समन्वयक जम्मू क्षेत्र का दौरा करें और व्यापक रूप से वहां सभी से मिलने का प्रयास करें।

- दौरे के उद्देश्यों को सामने रखते हुए विचार किया गया कि जमीनी स्तर पर समाज में शांति-सद्भाव और प्राकृतिक पर्यावरण की स्थिति की ताजा जानकारी प्राप्त की जाए।
- जम्मू क्षेत्र में गांधी शांति प्रतिष्ठान की सतत उपस्थिति बनी रहे, इसके लिए एक तत्व प्रचार केन्द्र की संभावना तलाशी जाय एवं उसके लिए एक कार्यकर्ता साथी की पहचान की जाए।
- गांधी विचार अर्थात समाज के विभिन्न समुदायों के बीच शांति-सौहार्द एवं पर्यावरण के संरक्षण के बारे में जागृति का संदेश प्रसारित किया जाए।
- जम्मू क्षेत्र में नए संपर्कों की तलाश एवं पुराने संपर्कों को मजबूत बनाया जाए।
- जम्मू क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं, संगठनों, समूहों, व्यक्तियों से संपर्क एवं संवाद साधा जाए।

दिल्ली से 19 अप्रैल की रात को चलकर 20 अप्रैल की प्रभात बेला में जम्मू स्टेशन पर उतरे तो श्री एस.पी. वर्मा अपने साथियों की बड़ी टोली

सहित वहां मौजूद थे और बहुत ही गर्म जोशी, उत्साह व फूलों की बौछार से उन्होंने हमारा स्वागत किया। स्टेशन से हम लोग श्री एस.पी. वर्माजी के निवास स्थान पर पहुंचे, वहां परिवार का जो प्यार, स्नेह व अपनापन मिला, उससे मन गदगद हो गया। श्री वर्माजी का पूरा परिवार ही सामाजिक कार्यों में रुचि लेता है, सहयोग व सहकार करता है। उनका निवास सबके लिए खुला है। अनेक समाज सेवी दिन भर घर में आते हैं, विचार विनिमय करते व सलाह लेते हैं। इनके काम करने का ढंग एवं सबको साथ लेकर चलने की अद्‌भुत क्षमता ने यहां इनकी एक विशेष छवि बनाई है, जिसे इन्होंने समर्पणपूर्वक विकसित किया है।

श्री वर्माजी के निवास से तैयार होकर हम बापू को श्रद्धांजलि देने के लिए दीवाने आम (पैलेस), मुबारक मंडी में गांधी प्रतिमा पर गए। जम्मू में यह स्थल दिल्ली के राजघाट जैसा महत्वपूर्ण स्थल बन गया है। यहां प्रमुख स्थानीय साथियों के साथ-साथ छात्रों का समूह भी उपस्थित था। उन सभी के साथ हमने प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर प्रणाम किया।

त्रिकुटा कालेज ऑफ एजूकेशन, नसदनी रायपुर, बनतालाब जम्मू में स्काउट एवं गाईड का एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री प्रो. आर.एस. चिब, राजस्व, राहत एवं पुनर्वास मंत्री श्री रमन भल्ला, गांधी शांति प्रतिष्ठान की अध्यक्ष सुश्री राधा भट्‌ट, आई.जी. पुलिस श्री दिलबागसिंह, युवा सेवा एवं खेल के निदेशक श्री जी.एन. डार, गांधी ग्लोबल फैमिली के अध्यक्ष श्री एस.पी. वर्मा, सहयोग इंडिया के डा. अश्विनी जोजरा, समन्वयक, गांधी शांति प्रतिष्ठान रमेश शर्मा आदि की उपस्थिति मुख्य रूप से रही। इस कार्यक्रम में अपने विचारपूर्ण सम्बोधन से सुश्री राधा भट्‌ट ने अहिंसा शांति एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

बनतालाब से हम लोग सीधे मुबारक मंडी, डिविजनल कमिश्नर श्री पवन कोतवाल से भेंट करने उनके कार्यालय पहुंचे। श्री कोतवाल से जम्मू में गांधी शांति प्रतिष्ठान दिल्ली की ओर से एक केन्द्र खोलने संबंधी चर्चा हुई। उन्होंने हमारे इस उद्देश्य को अपना पूर्ण समर्थन दिया और भविष्य में केन्द्र को जो भी सहयोग हो सकेगा देने का वचन भी दिया।

डिविजनल कमिश्नर दफ्तर के सामने एक पंडाल में जम्मू होम गार्ड के भाई-बहन तथा दूसरे पंडाल में 1947, 1964, 1971 के शरणार्थी धरना, प्रदर्शन

करते हुए लम्बे समय से बैठे थे। शरणार्थी परिवारों की मांग उनके समुचित पुनर्वास की थी। हमें भी आश्चर्य हुआ कि 1947 से यानि 60 वर्षों पूर्व के विस्थापितों को अब तक सरकारें पुनर्वास नहीं दे पाई हैं। उन्होंने आग्रहपूर्वक बुलाकर सुश्री राधा भट्ट को अपनी कहानी सुनाई तथा सहयोग का अनुरोध किया।

इस दौरे में सोचा ही गया था कि व्यापक संबंध एवं संवाद बनाया जाएगा। इसी दृष्टि से गांधी नगर में पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री मंगतराम शर्मा से मिलने उनके निवास पर गए। वरिष्ठ नेता एवं जनता से जुड़े राजनेता रहने के कारण श्री शर्मा के पास आज भी अनेक लोग मिलने आते हैं। इनसे अच्छी बातचीत हुई।

अपने पुराने एवं वरिष्ठ तथा जम्मू एवं कश्मीर में शांति-सद्भावना की आवाज दशकों से उठाने वाले साथी श्री बलराजपुरी से मिलना हमेशा ही आनंद की बात होती है। उनके निवास पर बातचीत हुई। उनकी बेटी डा. एलोरा पुरी ने विश्वविद्यालय में हमारा गांधी विचार संबंधी कार्यक्रम रखने का प्रस्ताव रखा जो हमने स्वीकार कर लिया। उनके घर पर विस्तार से लम्बे समय तक बातचीत करने का अवसर बना, जिससे हमें राज्य की वर्तमान स्थितियों की जानकारी मिली।

21 अप्रैल की सुबह तैयार होकर सरदार श्री बलविन्दरसिंह चालक की गाड़ी में राजोरी की ओर सुश्री राधा भट्ट, श्री रमेश शर्मा, श्री एस.पी. वर्मा, युवा साथी श्री अंकुश वर्मा के साथ आगे बढ़े। रास्ते में चौकी-चौरा एवं सुंदरबनी में स्वागत, चर्चा, चाय-पानी का कार्यक्रम हुआ। चौकी चौरा में स्थानीय नागरिकों ने बताया कि इस क्षेत्र में पानी का अभाव बढ़ता जा रहा है। यह समस्या गंभीर रूप ले रही है। जल समस्या से निपटने के लिए क्या-क्या कदम उठाए जा सकते हैं इस पर चर्चा हुई। जल संवर्द्धन के उपायों पर विचार किया गया।

सुंदरबनी में हम पहुंचे इससे पूर्व जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री उमर फारूक हेलिकाप्टर से यहां अपने कार्यक्रम के लिए पहुंचे थे। एक ओर उनका कार्यक्रम चल रहा था दूसरी ओर सुश्री राधा भट्ट स्थानीय साथियों से बात कर रही थीं। पुलिस के सुरक्षा प्रबंध आदि के बावजूद भी हमारे कार्यक्रम में कोई व्यवधान नहीं पड़ा।

साथियों से बातचीत के बाद हम राजोरी की ओर बढ़े। रास्ते में वर्षा ने हमारा स्वागत करना प्रारम्भ किया। ठण्ड भी बढ़ने लगी। ठण्ड से बचने के लिए ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करना पड़ा। जब हम राजोरी पहुंचे तो भारी वर्षा हो रही थी। राजोरी डाक बंगले पर अनेक लोग हम लोगों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। बैठक में स्वागत, चर्चा, बातचीत में स्थानीय नागरिकों ने इस क्षेत्र की समस्याओं को सभा में प्रस्तुत किया। साथ ही गांधीजी के उस ऐतिहासिक कथन को बार-बार दुहराया गया जो उन्होंने आज़ादी के समय जम्मू-कश्मीर आने पर कहा था कि "मुझे यहां जम्मू-कश्मीर में आशा की किरण नज़र आ रही है।" यह उन्होंने यहां की आवाम के बीच मौजूद भाई-चारे को देखकर कहा था। गांधीजी के इस जुम्ले को लगभग हर जगह सभाओं, बैठकों या आपसी बातचीतों में खूब याद किया गया। आज भी हमने देखा जम्मू-कश्मीर में उम्मीद की किरण मौजूद है। यहां हर पड़ाव पर हमें देखने को मिला कि हिन्दू, मुसलमान, सिख सब मेल से रह रहे हैं। इसी को आगे बढ़ाना व मजबूत करके फैलाना है। इसी संदर्भ में गांधी के नक्शे कदम पर चलने की आवश्यकता को हमारी ओर से जाहिर किया गया। नई तहरीक बनाने की बात बैठक में आई। नागरिकों की ओर से मुल्क के बंटवारे में हुए नुकसान को बड़े दर्द के साथ बताया गया। हमने आज की परिस्थितियों में आपसी एकता के महत्व पर जोर देते हुए सरहद के प्रहरी के रूप में खड़े इन नागरिकों की नए प्रयोगों की जरूरत की ओर ध्यान खींचा। अमन-चैन-शांति व सद्भावना की बात पर जोर देते हुए "गाली-गोली छड्डो, गल्ला, बोली पकड़ो" की भावना का इजहार करते हुए "गोली नहीं बोली चाहिए" का नारा बुलन्द किया गया।

गांधी के ग्राम स्वराज की शुरूआत स्वसाधनों का उपयोग कर जन-जन को काम मिले। यह इस क्षेत्र के गांवों में सहज साध्य होगा क्योंकि हमें बताया गया कि इन सुदूर गांवों में आज भी चर्खा चलता है और कपड़ा बुना जाता है। हम पहाड़ी लोगों को सरकार अनुसूचित जनजाति के दर्जे में आरक्षण दे, इसका मुद्दा भी उठाया गया। बराबरी का व्यवहार समाज को जोड़ सकता है किन्तु सरकार सरहद पर स्थित इन दो जिलों राजोरी व पूंछ को महत्व नहीं देती। इससे हमारी जनता में असंतोष रहता है। ऐसे सभी मुद्दे जनता ने हमको बताये इससे हमें यहां के स्थानीय मानस का दर्शन हुआ।

सभा के कार्यक्रम के बाद राजोरी से मेंढर की यात्रा शुरू हुई। एक के बाद दूसरी पर्वत शृंखलाओं को पार कर हर मोड़ पर प्रकृति व जनजीवन के

नए दृश्यों को देखते हुए हिमालय के इस सीमावर्ती क्षेत्र की यात्रा करने का अपना ही अनुभव एवं आनंद था। इस अवसर को पाकर हम देश के इस सीमान्त प्रांत के भूगोल व प्रकृति की समझ बढ़ा रहे थे। गांधी सेवा सेंटर, मेंढर में हमसे पूर्व ही हिमालय सेवा संघ के मंत्री श्री मनोज पांडेय, कार्यालय मंत्री श्री अजीत कुमार, दिल्ली एवं पानीकर्मी श्री राहुल वासवानी, नागपुर, महाराष्ट्र पहुंचे हुए थे।

गांधी सेवा सेंटर को जम्मू क्षेत्र के एक समर्पित सर्वोदय कार्यकर्ता स्व. अमरनाथ भारद्वाज ने स्थापित किया था। हिमालयी सीमान्त क्षेत्र में 1960 के दशक में हुए बाहरी आक्रमणों के कारण इन इलाकों में आमजन के बीच रहकर उनकी सेवा करने व उनके हौसलों को बुलन्द रखने की आवश्यकता की पूर्ति करने की दृष्टि से ऐसे केन्द्रों को हिमालय सेवा संघ आर्थिक कम परन्तु नैतिक बल अधिक प्रदान करता था। अतः इस छोटे से दीपक, गांधी सेवा सेंटर को सरहद की असुरक्षा व बार-बार के हमलों के थपेड़े बुझा न दें, इसका ख्याल हिमालय सेवा संघ ने तब से निरंतर ही किया। स्व. भारद्वाज जी के बाद श्री कस्तूरीलाल बंगोत्रा तथा सर्वोदय जीवन शैली व खादी कार्य में प्रशिक्षित उनकी पत्नी श्रीमती किरण बंगोत्रा ने आज इसके आकार और विस्तार दोनों दृष्टियों से बढ़ाकर पिछले लगभग 35-40 वर्षों का इतिहास रचा है।

मेंढर पहुंचकर हम सीधे ही इस क्षेत्र से संबंधित चर्चा में लग गये। चर्चा मंडली में क्षेत्र के स्थानीय नागरिकों व सेंटर के कार्यकर्ता साथियों के साथ एस.डी.एम. श्री चौधरी भी शामिल थे। इस क्षेत्र के पर्यावरण एवं जल स्रोत के बारे में व्यापक रूप से चर्चा हुई। सब जगह प्राकृतिक जल के क्षीण होने की जानकारी मिलती है। यहां भी यही समस्या सिर उठा रही है।

यह चर्चा जिस सभागार में हो रही थी उसका निर्माण सेना के सद्भावना प्रोजेक्ट के अन्तर्गत किया गया है। सद्भावना प्रोजेक्ट के माध्यम से सेना जनता के लिए विभिन्न सेवाएं दे रही है। इसका अच्छा संदेश लोगों के मानस व समाज में जा रहा है। सेना के प्रति एक अलग दृष्टि भी बनने लगी है। सेना रचनात्मक कार्य भी कर सकती है, ऐसी छवि विकसित हो रही है। इससे जनता का विश्वास बढ़ा है। हिंसा, आतंकवाद पर भी इसका प्रभाव पड़ा है, आगे भी निश्चित तौर पर पड़ेगा ही। हमें सेना का यह एक अच्छा कदम लगा। क्षेत्र में अमन, सौहार्द, पर्यावरण सुरक्षा, जल स्रोतों, परस्पर विश्वास, गांधी सेवा सेंटर आदि विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। सेंटर ने इतने लम्बे समय से इस

क्षेत्र में कार्यरत रहकर अपना एक स्थान बनाया है। आज भी श्री कस्तूरीलाल, श्रीमती किरण बंगोत्रा परिवार पूरी निष्ठा से कार्य कर रहा है। उनका इस क्षेत्र की हर जाति, सम्प्रदाय व तबके के सभी लोगों से संपर्क एवं संवाद है। जनता, प्रशासन, सेना, पुलिस सभी से उनके मैत्रीपूर्ण रिश्ते हैं।

ऐसे केन्द्रों ने गांधी की बात को सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र में भी जन-जन तक पहुंचाने के लिए दीपक जलाकर रखा है। यह बड़ी बात है। कठिन क्षेत्र में भी ये कार्यकर्ता हिम्मत के साथ डटे रहे हैं। इससे सभी को प्रेरणा मिलती है। गांधी का काम आगे बढ़ाने में इन केन्द्रों की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। केन्द्र में विद्यालय, मोमबत्ती उत्पादन, उद्योग, कपड़ा बुनाई का काम चलता है। बंगोत्रा परिवार को साधुवाद।

22 अप्रैल को गांधी सेवा सेंटर, मेंढ़र में आम जन सभा का कार्यक्रम अतिथियों के स्वागत, बाल नृत्य एवं गीतों से शुरू हुआ। स्थानीय आम महिला-पुरुषों के साथ-साथ सेना, पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों की भी भागीदारी कार्यक्रम में रही। बाहर से आए अतिथियों का केन्द्र में उत्पादित शॉल से स्वागत, सम्मान किया गया।

दोपहर बाद कृष्णाघाटी, लोअर कृष्णाघाटी, डेरा की गली अर्थात के.जी, एल.के.जी., डी.के.जी. होते हुए काफिला पूंछ की ओर बढ़ा। रास्ते में सुंदर जंगल, नदी, पहाड़ियां देखने का सुअवसर बना। पूंछ पहुंचते ही हमारे पास तुरंत ही एस.डी.एम., पूंछ और बाद में जिलाअधिकारी, पूंछ आ पहुंचे। श्री एस.पी. वर्माजी के सम्पर्क कौशल के कारण यह सब हुआ।

उनसे हमने अपनी इस यात्रा के मकसद के बारे में बातें की। उन्हें लगा कि हमारी बात स्थानीय नागरिकों और यहां के सभी तबकों के लोगों से अवश्य होनी चाहिए क्योंकि गांधी विचार आज के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है अतः उन्होंने स्थानीय लोगों को एकत्र करने के लिए व्यवस्था की और हमें तब तक पाकिस्तान व भारत के बीच की सेना चौकी चकनदा बाग देखने का सुझाव दिया। हम सीमा पर स्थित चकनदा बाग चौकी पर गए। यहां एल.ओ.सी.(लाईन ऑफ कन्ट्रोल) ट्रेड सेंटर बनाया गया है। भारत-पाक के मध्य यहां व्यापार शुरू किया गया है। नकद भुगतान, पैसे के आधार पर व्यापार नहीं होता। सामान के आदान-प्रदान की एक सूची बनी है उसी के अनुसार सामान मंगवाया या भेजा जा सकता है। इस व्यवस्था का मकसद यह है कि इससे दो

देशों के संबंधों में सुधार आएगा। दो पड़ौसी एक दूसरे को और अच्छी तरह समझेंगे, जानेंगे। तनाव, हिंसा, अलगाव में कमी आएगी।

इस चौकी पर कुमाऊं रेजीमेण्ट तैनात है। सुश्री राधा भट्ट कुमाऊं से हैं। उन्होंने वहां तैनात साथियों से बहुत ही आत्मीय ढंग से, उनकी ही बोली में बातचीत की। एक सैनिक तो बहुत कम आयु का नजर आ रहा था।

सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण शाम के बाद यहां से आगे नहीं जाने दिया जाता। एल.ओ.सी. के आसपास शाम से रातभर यानि सुबह तक आना-जाना रोक दिया जाता है जबकि इस क्षेत्र में गांव व बस्ती भी है। बंटवारे से पहले दोनों ओर का क्षेत्र एक ही था। बंटवारे ने देश, समाज, परिवार, रिश्तेदार, इंसान को बांटकर रख दिया। कटुता व अलगाव का भाव पैदा कर दिया गया जबकि कुदरत की धरती का फैला आंचल इधर और उधर एक सा ही दिखाई दे रहा था।

एल.ओ.सी. चकनदा बाग से वापिस लौटने पर पूंछ के स्थानीय नागरिकों की बैठक विश्रामगृह के सभागार में हुई। इसमें पूंछ नगर के प्रमुख नागरिकों के साथ विशेषकर एल.ओ.सी. ट्रेड सेंटर के माध्यम से व्यापार करने वाले व्यापारियों की उपस्थिति बड़ी संख्या में थी। इन व्यापारियों ने अपनी समस्याएं, सुझाव, दो देशों के बीच खुले व्यापार से जगी आशाएं आदि के बारे में विस्तार से बातें रखी। व्यापार प्रारंभ करने के लिए 21 वस्तुओं की सूची बनाई गई है। मगर बीच-बीच में अचानक ही इसमें परिवर्तन कर दिया जाता है। बगैर पर्याप्त पूर्व सूचना के वस्तु के व्यापार पर रोक लगा दी जाती है। इससे व्यापारी को बहुत ही दिक्कत आती है। सामान इक्ट्ठा हो जाता है, पैसा फंस जाता है, सामान का क्या करें? सामान खराब होने का डर भी बन जाता है।

व्यापार एवं व्यापारी बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। सवा साल से व्यापार चल रहा है। इन लोगों की मांग थी कि व्यापारी को एक दूसरे से मिलने के लिए आने-जाने की छूट होनी चाहिए। वस्तु पर रोक लगाने की सूचना कम से कम एक माह पूर्व देनी चाहिए। कागजात जल्दी बनने चाहिए। परस्पर विश्वास बढ़े, ऐसा माहौल बनाना चाहिए। इसके लिए अधिकारी व प्रशासन अधिक संवेदनशील बनें। व्यापार को बढ़ाने के लिए कुछ विशेष सुविधाएं भी दी जाएं। कुछ व्यापारियों ने उनका पैसा डूब जाने की भी शिकायत की। एक व्यापारी का तो लगभग 25 लाख रुपया फंस गया है। व्यापारियों की इच्छा थी कि उनकी बात राज्य सरकार में ऊंचे स्तर तक पहुंचाई जाए।

जम्मू में राज्यपाल महोदय श्री एन.एन. वोहरा से मिलने पर व्यापारियों की इन कठिनाईयों को हमने उनके सामने रखा। यह जानकर अच्छा लगा कि राज्यपाल महोदय को इसकी जानकारी थी तथा उन्होंने कहा कि मैं इस संबंध में समाधान निकले, इसके लिए प्रयासरत हूं।

बैठक में पुनर्वास, गांधी विचार, अमन-सौहार्द आदि पर भी विस्तार से चर्चायें हुई। सभा में उपस्थित नागरिकों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, हमारी पीढ़ी ने लगातार कई बार जख्म झेले हैं। आगे ऐसे हालात न हों इसके लिए गांधी के अहिंसा व शांति के कार्यों को आगे बढ़ाना होगा। आज दुनियां भी गांधी के फलसफे को स्वीकार कर रही है। "कश्मीर का मामला नासूर बन गया है। उसे भी हमें ठीक करना होगा जो हिंसा से नहीं हल होगा" इस बैठक में हिन्दू, सिख और मुसलमान सभी शामिल थे और सबने एक दिल होकर सबके हित की बातें व मुद्दे उठाये। एक मौलाना साहब ने तो यहां तक कहा, "हमारे सारे मसलों, दिक्कतों व दुश्वारियों का हल केवल गांधी के पास है।"

यहां समाज ने तीन जंगों और 20 वर्ष के आतंकवाद को झेला है। इस सबके कारण लोग विस्थापित हुए हैं। गांव के गांव उजड़ गये हैं। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि किरनी गांव को 2005 में सीमा निर्धारित करते समय हटाया गया। मगर उसका सही ढंग से पुनर्वास अभी भी नहीं हुआ है। 110 परिवार पशुशाला जैसी एक माईग्रेंट कालोनी में कष्टपूर्ण जीवन जी रहे हैं। इनको कम से कम बुनियादी आम सुविधाएं तो मिलनी ही चाहिए। इस सीमान्त क्षेत्र में शांति व भाई चारे की बातें करना बहुत ही जरूरी एवं महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में सांस्कृतिक केन्द्र बनने चाहिए, जहां हिन्द-पाक के कलाकार परस्पर मिलें। अपनी कला का आदान-प्रदान करें। कलाकारों को साथ काम करने का मौका मिलना चाहिए, जिससे दोनों देशों की जनता के बीच प्रेम संबंध बढ़ें।

जनता की ऐसी जागरूक बातें सुनकर हम बहुत प्रभावित हुए और हमने उनकी बातें राज्य स्तर पर अधिकार सम्पन्न लोगों तक पहुंचाने का आश्वासन भी दिया। किरनी गांव के परिवारों की दुर्दशा का वर्णन सुनकर हमें बहुत दुःख भी हुआ और शर्म भी आई कि अपनी जनता के सुख-दुखों के प्रति हमारी सरकारें इतनी असंवेदनशील हैं। इस देश में इतना धन है, इतने समाज सेवा के लिए समर्पित लोग हैं, परन्तु सीमान्त पर बसे एक छोटे से गांव के 110 परिवारों को इंसानों की तरह जीने की सुविधा नहीं मिल सकती। यह कैसा जनतंत्र है जहां जन की ही ऐसी उपेक्षा हो रही है?

23 अप्रैल को हम पूंछ से राजोरी को चले। शाम तक जम्मू पहुंचने का उद्देश्य था। राह में गुरू गोबिन्दसिंहजी के तपस्थल नगाली साहिब पहुंचे। गुरूद्वारा एवं तपस्थली गुफा के दर्शन कर शांति-अमन-सौहार्द की प्रार्थना की। यहां से मंडी बूढ़ा अमरनाथ चट्टानी के मंदिर गए, जहां कलैक्टर, पूंछ के निर्देश पर हमारे लिए प्रार्थना-पूजा की विशेष व्यवस्था आयोजित की गई थी। यहां बी.एस.एफ के भोजनालय में हमारे लिए नाश्ते की व्यवस्था भी की गई थी। नाश्ते के साथ-साथ बी.एस.एफ. के साथियों से अपनी यात्रा के मकसद के बारे में बातचीत करके हम सुरणकोट पहुंचे। यहां डाक बंगले में सुरणकोट के नागरिकों की एक बैठक आयोजित की गई थी। लगभग 15-20 संजीन्दा नागरिक यहां एकत्र हुए थे। ये बहुत विवेकपूर्वक संतुलित भाषा में बोलने वाले लोग थे। अपने इसी लहजे में इन्होंने परनई जल विद्युत परियोजना (37 मेगा) का मुद्दा उठाते हुए कहा कि इस परियोजना के कारण सुरणकोट के साथ अन्याय या नाइंसाफी नहीं होनी चाहिए। इस प्रोजेक्ट पर पुनर्विचार होना जरूरी है, क्योंकि दशकों पूर्व प्रायोजित इस प्रोजेक्ट के लिए नदी में अब उतनी मात्रा में पानी नहीं रहा है अतः आज की पानी व पर्यावरण की स्थिति का पूरा जायजा लेना चाहिए। इससे प्रभावित होने वाले लोगों का पुनर्वास भी पहले से ही सुनिश्चित होना चाहिए। उनमें से किसी सज्जन ने एस.आर.ओ. 43 का मुद्दा भी उठाया। कहा "उन लोगों को रोजगार व सहायता मिलनी चाहिए। उस समय कुछ 15 वर्ष से कम उम्र के लोग भी मारे गए थे, अभी तक उनके परिवारों को सहायता देने की कार्यवाही नहीं हो रही है।"

उन लोगों के मुद्दे गम्भीर व समग्र समाज के मुद्दे थे। वे कहने लगे, "सियासी कामों के अलावा भी दूसरे बड़े काम हैं जो करने हैं, जो होने हैं। एकता, अमन, भाईचारे पर जोर देना एक बहुत बड़ा काम है। जिसे करना जरूरी है। अभी तो रियासत का अधिकांश खर्च घाटी पर ही होता है, उसके बाद जम्मू पर और उससे बचा-खुचा पूंछ-राजोरी की ओर आता है। सुरणकोट तो कहीं गिनती में भी नहीं आता।" हमारी ओर से लोक अभिक्रम और गांधी के शांति, भाई-चारे व अहिंसा के पैगाम को घर-घर पहुंचाने की अपील का उन्होंने हार्दिक स्वागत किया और कहा, "इस क्षेत्र में गांधी शांति प्रतिष्ठान को अपना एक केन्द्र खोलना चाहिए। पहले प्रभातफेरी आदि होती थी। उसे फिर शुरू करना चाहिए। गांधी की तालीमात पर जाना होगा। आज रहनुमा, रहबर, राहज़न का फर्क कठिन हो गया है। गांधी विचार के शिविर लगाने चाहिएं। नई पीढ़ी तक गांधी की बात पहुंचे।"

"गांव की जनता को तोड़ा जा रहा है, अलग किया जा रहा है। विकास के नाम पर जबर्दस्त लूट व धोखा हो रहा है। परनई प्रोजेक्ट के संबंध में सुरणकोट की जनता की आवाज़ सुनी जानी चाहिए। पुरानी गलतियों से सबक सीखना चाहिए तथा हिम्मत से गलती सुधारने के लिए कदम उठाने चाहिए। "प्रकृति और मनुष्य का रिश्ता परस्पर सहयोग पर कायम हो, लूट पर नहीं।"

ऐसी सार्थक चर्चा-विमर्श का सुंदर प्रभाव हमारे मनों में भी सकारात्मक रहा और एकत्र हुए नागरिकों के दिलों में भी। उन्होंने हमें हमारी आगे की यात्रा के लिए बड़े प्रेम से विदाई दी।

सुरणकोट से राजोरी पहुंचे। राजोरी में एक अच्छी बड़ी सभा हुई। इसमें सदरे इजलास के रूप में वन, पावर, परिवहन, खाद्य आपूर्ति, पर्यावरण मंत्री श्री शबीर अहमद खान के साथ सुश्री राधा भट्ट उपस्थित रहीं। बैठक में सुश्री राधा भट्ट के द्वारा श्रीमती मंजू शर्मा तथा श्री इकबाल साल को उनकी सेवाओं के लिए गांधी सेवा मैडल से नवाजा।

हर स्थान की तरह यहां भी सुश्री राधा भट्ट ने सवाल उठाया कि हम क्या कर सकते हैं? हम एक हों, तभी आगे बढ़ सकेंगे। हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। प्राकृतिक स्रोत मात्र संसाधन नहीं हैं बल्कि वे हमारे समाज व समुदाय की धरोहर हैं। प्रकृति उपभोग का संसाधन नहीं पूर्वजों से आई धरोहर है, जिसे हमने भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रखना है। भूमि, पानी जंगल के संबंध में आज के विकास की प्रक्रिया व अवधारणा को बदलना होगा। पूरे हिमालय क्षेत्र की एक अलग ही विकास नीति बननी चाहिए क्योंकि हिमालय इस देश को जल और वायु देता है, इस मुख्य उद्देश्य को प्राथमिकता देनी है न कि इसके द्वारा पैसा कमाने के लक्ष्य को। हमें चौड़ी पत्ती के पेड़ों का विकास, संरक्षण संवर्द्धन करना होगा। विकास के कार्य विशेषकर हिमालय में कैसे हों- इस पर विचार करने की जरूरत है। सड़कें कैसे बनें, इस पद्धति, जीवन जीने के तरीके बदलने होंगे।

इन बातों का लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा और उन्होंने सुझाव दिए कि "ऐसे लोगों को जम्मू कश्मीर में बार-बार दौरे करने चाहिए। यहां के हालात में बदलाव लाने के लिए लोगों में जागृति लाने के लिए यहां आना चाहिए। अपनी बातें जनता के सामने खुलकर रखनी चाहिए। अमन-प्रेम-भाईचारे के माहौल को और मजबूत बनाने में इससे मदद होगी। यह गांधी वालों की विशेष

जुम्मेवारी है। आप लोग आए- इससे एक माहौल बना है। इसे बनाए रखना है। गांधीजी ने जो आशा की किरण जम्मू-कश्मीर में देखी थी वह अभी भी जिन्दा है केवल उसे और स्पष्ट करके प्रकाशमान करने की जरूरत है।"

23 अप्रैल को देर रात हम लोग जम्मू वापिस पहुंचे। लगातार यात्रा करने के बावजूद हममें पूरा उत्साह, जोश व आनन्द बना हुआ था।

24 अप्रैल को राज्यपाल महोदय से मिलने का समय निश्चित हो चुका था। समय पर सभी साथी सुश्री राधा भट्ट के नेतृत्व में राजभवन पहुंचे। गेट पर सब गाड़ी से उतरकर प्रांगण में खड़े हो गए। न वहां कोई बैठने की व्यवस्था थी न खड़े होने का कोई छायादार, छत वाला स्थान। हम लोग पेड़ों की छाया तलाशकर वहां इंतजार करने लगे। यहां अफसरशाही, लालफीताशाही के नमूने की झलक का अनुभव प्रतिनिधि मंडल को हुआ। सुरक्षाकर्मी कुछ सुनने-जानने, मानने को तैयार नहीं, बातचीत के रूखेपन ने स्थिति को और गंभीर एवं चिंतनीय बना दिया। यह कैसा लोकतंत्र? यह सवाल मन में अनेक बार आता है, यहां भी आया। थोड़ी देर बाद सुश्री राधा भट्ट अकेली ही मुख्य भवन की ओर बढ़ीं। उनके साथ किसी को भी जाने नहीं दिया गया। सुश्री राधा भट्ट ने जाकर हम चार साथियों के नाम दिए जो उन्हें मालूम थे, उन्हें तुरंत बुला लिया गया। हम लोग कार्यालय में पहुंचे तथा पी.ए., पी.एस. आदि को स्थिति से अवगत कराया। बहुत समझाने के बाद हमारे अन्य साथियों को भी कार्यालय तक आने देने पर रजामंदी हुई। पहले आए हम चार साथी अंदर गए। राज्यपाल महोदय वहां थे, और उन्हें जब मालूम हुआ कि कुछ साथी बाहर ही हैं तो वे स्वयं उठे और उन्हें लेने कार्यालय की ओर चल दिए तथा सबको बैठक में बुलाकर ले आये। हम सब उनकी नम्रता व सहृदयता से अभिभूत हो गए।

प्रतिनिधि मंडल से राज्यपाल महोदय ने स्कूलों में गांधी विचार पहुंचाने व जम्मू-कश्मीर की स्थिति आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस बात को स्वयं के अनुभव के आधार पर पुष्ट किया कि नई पीढ़ी के पास गांधी विचार पहुंचे, इसके लिए बहुत काम करने की जरूरत है। उनकी अपेक्षा थी कि हमें सभी शिक्षण संस्थाओं में व्यापक रूप से गांधी विचार पहुंचाना चाहिए।

हमने अपनी यात्रा में विभिन्न नगरों व गांवों के लोगों द्वारा उठाई गई उनकी परेशानियों की सभी बातें राज्यपाल महोदय को बताई। राज्यपाल महोदय

से नैतिकता, सम्मान, मूल्य, संस्कार, शांति, अहिंसा, पड़ौसी देश, ग्लोबलवार्मिंग, सर्वधर्म समभाव, जल, जंगल, पर्यावरण पर भी चर्चायें हुई। पूंछ जैसे सीमान्त नगर में जन सेवाओं स्वास्थ्य, अस्पताल की बात भी की। जम्मू कश्मीर में कई परिवारों के पुनर्वास, एस.आर.ओ. 43, व्यापारियों से हुई बातचीत आदि के बारे में भी राज्यपाल महोदय को सूचित किया गया।

यह भी बताया कि गांधी शांति प्रतिष्ठान जम्मू-कश्मीर में केन्द्र प्रारंभ कर अमन, सौहार्द, भाई-चारा, गांधी विचार का सतत कार्य करना चाहता है। "टेकिंग गांधी टू स्कूल्ज़", "स्कूलों में गांधी" कार्यक्रम के अंतर्गत नई पीढ़ी के समक्ष गांधी विचार को रखना चाहता है। राज्यपाल महोदय ने विचार का स्वागत करते हुए इसके महत्व पर जोर दिया। उनका भी मानना था कि आज की स्थिति को देखते हुए गांधी विचार हर एक के लिए उपयोगी है। इसको जन-जन तक पहुंचाने के लिए हमें प्रयास करने हैं। राज्यपाल महोदय से विस्तार से तथा बहुत ही आत्मीय ढंग से खुलकर बातचीत हुई। उन्होंने सर्वोदय इंटरनेशनल ट्रस्ट के माध्यम से बच्चों में किए गए उनके अपने कार्यों की भी चर्चा की।

गांधी विचार को बच्चों के मध्य विभिन्न तरीकों, कार्यक्रमों के माध्यम से पहुंचाना है। भाषण, चर्चा, बातचीत, गीत, कविता, चित्रकला, लेख, प्रदर्शनी, फिल्म, नाटक, अंताक्षरी, प्रश्नोत्तरी, संवाद, गोष्ठी, कार्यशाला, सभा, सम्मेलन, बाल महोत्सव, खेल, यात्रा आदि के माध्यम से हम गांधी विचार को पहुंचा सकते हैं। स्कूलों-कालेजों में गांधी अध्ययन केन्द्र बनाए जा सकते है। स्वाध्याय केन्द्र के माध्यम से गांधी साहित्य का पठन, मनन चिंतन किया जा सकता है। समाचार-पत्र पत्रिकाओं में लेख सामग्री देकर विचार को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास हो सकता है। इस विषय पर व्याख्यानमालायें प्रारंभ की जा सकती हैं। इन सुझावों का सबने स्वागत किया और कहा कि इसके लिए शक्तिभर हम प्रयास करेंगे।

राज्यपाल महोदय से मिलने जाते समय जो अनुभव हुआ था, उससे सबक मिला कि आज भी अफसरशाही, नौकरशाही में सत्ता का नशा ज्यादा है, सेवक की भावना कम। यह भी चिंतन हुआ कि नागरिक व प्रशासन के बीच की दूरी कम हो। इसके लिए भी प्रयास होने चाहिए। प्रशासन ज्यादा संवेदनशील कैसे हो? नागरिक व प्रशासन के बीच सहजता, सरलता से संवाद हो सके। हिंसा और आतंक के माहौल को बढ़ाने वालों ने असुरक्षा व अविश्वास को बहुत बढ़ावा दिया है। फिर भी प्रशासन खुला, पारदर्शी, सहज उपलब्ध हो तो

परस्पर विश्वास व प्रेम के संबंध बनेंगे। तभी सच्चे लोकतंत्र की तरफ देश बढ़ सकेगा। तभी लोक शक्ति, जनशक्ति का उभार भी संभव होगा।

राज्यपाल महोदय ने गांधी शांति प्रतिष्ठान की जम्मू में चलने वाली प्रवृत्तियों के लिए जम्मू-कश्मीर शिक्षा निदेशालय से सहयोग लेने की सलाह देते हुए शिक्षा निदेशक की सक्रियता व उनकी गांधीजी के प्रति रुचि का भी उल्लेख किया। उन्होंने माना कि गांधी विचार के प्रचार-प्रसार में निदेशक महोदया एवं निदेशालय के सभी अधिकारियों का पूरा सहयोग मिलेगा।

राजभवन से हम लोग सीधे राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रिहाड़ी पहुंचे। यहां शिक्षा निदेशक महोदया ज़ाहिदा ख़ान स्वयं उपस्थित थीं। उनसे गांधी शांति प्रतिष्ठान के जम्मू में प्रारंभ किए जाने वाले काम के बारे में चर्चा हुई। उनकी इसमें उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया मिली। विद्यालय ने हमारे लिए एक कार्यक्रम छात्राओं, शिक्षिकाओं और अन्य गण्यमान्य नागरिकों के साथ आयोजित किया था, जो काफी सुनियोजित था। कार्यक्रम का प्रारंभ रामधुन से हुआ। रामधुन सभागार में उपस्थित सभी छात्राओं ने बहुत ही सरस ढंग से सामूहिक रूप में गाई। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रविन्द्र कौर ने सबका स्वागत किया। स्वागत के बाद कु. शिवानी गंडोत्रा, कु. पलक आनन्द, कु. सुगन्धा थापा, कु. परीक्षा ने हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू में गांधीजी के बारे में अपने विचार रखे। सुश्री राधा भट्ट ने छात्राओं को दृष्टि में रखते हुए सादा जीवन उच्च विचार की बात रखी, उन्होंने गांधीजी के जीवन की उन विभिन्न घटनाओं को भी कहा, जिनके कारण गांधीजी ने अपनी वेशभूषा को सादगीपूर्ण बनाया यानि एक छोटी धोती पहनने का निर्णय लिया। गांधीजी समाज में चल रही हर छोटी-बड़ी बात को महत्व देते थे और उसके अनुसार अपना आचरण बदलते थे ताकि वे गरीबों के साथ एक रस हो सकें। सुश्री राधा भट्ट ने प्राकृतिक संसाधनों का मुद्दा उठाते हुए उपभोग-पूर्ण जीवन शैली पर भी सवाल उठाया और प्रकृति और समाज के साधनों का उपयोग करने की राह सुझाई।

श्री रमेश शर्मा ने "एक दुलारा, देश हमारा प्यारा, हिन्दुस्तान" गीत सारी सभा को साथ जोड़ते हुए मिलकर गाया। गीत के साथ माहौल में जीवन्तता आ गई। श्री रमेश शर्मा ने छात्रायें कैसे समाज में सौहार्द बढ़ाने में अधिक सफल सिद्ध हो सकती हैं, इसके बारे में प्रेरणापूर्ण बातें प्रस्तुत कीं।

सड़क एवं भवन कार्य मंत्री श्री गुलाम मौहम्मद सरूरी के साथ एक सभा का आयोजन किया गया था। सुश्री राधा भट्ट ने स्वीडन, फिनलैंड, नार्वे

आदि देशों का उदाहरण देते हुए हिमालय क्षेत्र में सड़क निर्माण की प्रक्रिया पर्यावरण मैत्री पूर्ण दिशा में सुधारने पर जोर दिया। सड़क निर्माण या अन्य निर्माण कार्य में भी हमें ऐसी प्रक्रिया अपनानी चाहिए जिससे प्रकृति का कम से कम नुकसान हो। पेड़ों व हरियाली को कम से कम काटा जाए। पानी के स्रोत, नदी-नालों में निर्माण से रूकावट पैदा न हो। बल्कि निर्माण कार्य करने वाले की ज़िम्मेदारी हो कि वह वृक्षारोपण, नए पेड़ लगाने का कार्य भी सड़क बनाने के साथ-साथ करे। कार्यक्रम में मंत्री महोदय को गांधी सेवा मैडल से नवाजा गया।

डी. सी. ऑफिस से बाबापीर मीठा तक गांधी ग्लोबल फैमिली के सभी साथियों व अन्य नागरिकों के साथ रामधुन गाते हुए पदयात्रा करके पहुंचने का सुंदर आयोजन किया गया। बाबा पीर दूसरों की पीर मिटाने का कार्य करके ही मीठे हो गए थे, और आज भी दुःखी, पीड़ित उनके मज़ार पर आकर दुःखों से मुक्ति पाते हैं। बाबापीर मीठा की मज़ार पर चद्दर चढ़ाई गई। यह नगर का पुराना हिस्सा है। यहां हिन्दू-मुस्लिमों की मिली-जुली आबादी रहती है। यहां एक सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा में बड़ी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति थी। महिलाओं की दुःखभरी बातें सुनते हुए सुश्री राधा भट्ट ने दर्द के आंसूओं की बात कही। किसी का दर्द देखकर आंखों से आंसू टपक पड़े यह एक अहम् मानवीय संवेदना का गुण है। पर पीड़ा से दुःखी होना, पर पीड़ा को दूर करने का प्रयास करना, दुःख-सुख साझा करना, दुःख-सुख बांटना जरूरी है। दुःख बांटने से कम होता है तथा सुख बांटने से बढ़ता है। पर आज मानव समाज की समस्याओं का कारण ही यह है कि मानव दूसरे की पीड़ा को नहीं समझता। उसकी आंख का आंसू सूख गया है। पर पीड़ा को महसूस करके उसको दूर करने की दिली कोशिश ही अहिंसा है।

सुश्री राधा भट्ट के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल डी.जी.पी. श्री कुलदीप खुडा से मिलने पुलिस मुख्यालय पहुंचा। डी.जी.पी. महोदय से पुलिस एवं नागरिकों के परस्पर सहयोग पर अच्छी बातचीत हुई। पुलिस मुख्यालय बहुत साधन सम्पन्न ढंग से बना हुआ है।

25 अप्रैल को श्री कस्तूरी लालजी तथा किरण बंगोत्राजी के परिवार के निवास स्थल भगवती नगर पहुंचे। जम्मू में गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के केन्द्र के लिए भी इस स्थल को देखने की बात थी। केन्द्र के बारे में विचार-विमर्श हुआ। यहां गांधी सेवा केन्द्र मेंढर के अध्यक्ष श्री जाफर चौधरी व उनके युवा

पुत्र से मुलाकात, अच्छी बातचीत हुई। श्री एस.पी. वर्मा यहां के सभी गण्यमान्य तथा सार्वजनिक सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय लोगों से हमारा यथा संभव परिचय कराना चाहते हैं। उनकी यह दृष्टि बहुत उपयोगी है। इससे हमारे केन्द्र के लिए एक भूमिका तैयार होती है साथ ही शांति एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का संदेश भी जाता है। इसी क्रम में हम पूर्व मंत्री डा. रमेश शर्मा के यहां मुलाकात के लिए गए। इनका जीवन बहुत ही सादगीपूर्ण एवं सरल-सहज रहा है।

सिटी पैलेस में सुश्री राधाभट्ट, अध्यक्ष, गांधी शांति प्रतिष्ठान की प्रेस वार्ता रखी गई। प्रेस वार्ता में बड़ी संख्या में समाचार पत्र, पत्रिकाओं, इलेक्ट्रोनिक मीडिया कर्मियों की भागीदारी रही। समय से पूर्व और इतनी बड़ी संख्या में मीडिया कर्मियों की उपस्थिति देखकर बहुत ही अच्छा लगा। जम्मू का लगभग पूरा मीडिया उपस्थित था। बाद में इस वार्ता का प्रकाशन प्रचार-प्रसार भी पर्याप्त मात्रा में हुआ। हमने आयोजक टीम के अपने मित्रों तथा संबंधित सभी साथियों को बहुत-बहुत साधुवाद दिया। जागरूक, सक्रिय, निष्पक्ष और निडर मीडिया समाज तथा राष्ट्र की शक्ति है, इसीलिए इसे लोकतंत्र का चौथा खम्भा कहा गया है।

दोपहर के भोजन के लिए डा. सीमा रोहमित्रा ने हमें निमंत्रण दिया था। उनके साथ हम छः लोग जम्मू क्लब पहुंचे। स्वागत कार्यालय पर नियुक्त कर्मचारी ने हम तीन कुर्ता-पाजामा पहने लोगों के लिए कहा कि हमारे क्लब के निर्धारित ड्रेस कोड के अन्तर्गत कुर्जा-पाजामा की ड्रेस की स्वीकृति नहीं है। अतः आप लोग अंदर नहीं जा सकते हैं। आजादी के छः दशकों के बाद भी भारत में भारतीय पोशाक पहनकर आप क्लब के भीतर नहीं जा सकते, यह जानकर आश्चर्य एवं दुःख हुआ कि आज भी हमारी मानसिकता में इस प्रकार के गुलामी के संस्कार पड़े हुए हैं। जम्मू क्लब के स्वागत कक्ष में एक बोर्ड पर नाम लिखे थे उनके आगे आई.ए.एस. भी लिखा हुआ था। यह जम्मू क्लब के बनाने, चलाने वालों के नाम ही होंगे। भारतीय प्रशासनिक अधिकारी भारत के संविधान की शपथ लेता होगा, जिसमें भारत के हर नागरिक का समान सम्मान व समान हैसियत है। संविधान के सम्मान, गौरव की रक्षा की बात भी करता होगा। संविधान के पालन की दुहाई देता होगा। मगर भारत की भूमि पर, जनता के इन सेवकों द्वारा निर्मित स्थान जिसके लिए जमीन भी संभव है सस्ती या अनुदान पर ही मिली होगी, के अंदर एक नागरिक जो कुर्ता-पाजामा

पहनता है, उसका प्रवेश प्रतिबंधित है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। लोकतंत्र के सर्वोच्च स्थल संसद में भी आप जिस ड्रेस को पहनकर ससम्मान आ-जा सकते हैं, राष्ट्रपति भवन, राजभवन, प्रधानमंत्री कार्यालय आदि स्थानों पर जा सकते हैं, जम्मू-क्लब में उस पर प्रतिबंध है। ऐसे स्थानों पर प्रशासन को स्वयं सतर्कता बरतते हुए, ऐसे प्रतिबंधों को खारिज करना चाहिए। ऐसी मानसिकता को जड़-मूल से मिटाने की जरूरत है। गुलामी के ऐसे प्रतीक देश में जहां भी मौजूद हों उन्हें तुरंत हटाने की व्यवस्था करनी चाहिए। अच्छा तो यही रहेगा कि इन स्थानों पर बैठे अधिकारी, जिम्मेवार व्यक्ति स्वयं इस तरह के कानूनों व कायदों को तुरंत हटाकर अपना दामन साफ कर लें। अन्यथा इसके विरुद्ध आंदोलन होगें, आज या कल आवाज अवश्य उठेगी।

सामाजिक, स्वैच्छिक संगठनों, समूहों के साथ विचार-विमर्श का आयोजन सिटी पैलेस में रखा गया था। इसमें विभिन्न समूहों, संगठनों, संस्थाओं के साथियों ने अपना परिचय देते हुए अपने मुद्दे रखे। विचार-विमर्श में समाज (सिविल सोसायटी) को लेकर अनेक बातें उठाई गई। निष्ठा, तत्परता एवं उत्साह (मिशनरी ज़ील) खत्म होता दिख रहा है। पानी की समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। नागरिक सुविधाओं का अभाव है। नैतिक शिक्षा की आज सबसे ज्यादा जरूरत है। गांधी के सपने की जरूरत है। अलग जीवन जीने के बजाय समग्र जीवन की ओर बढ़ना होगा। पैसे का दबाव, पैसे की सत्ता, पैसे का खेल बढ़ता जा रहा है। पैसा ही सब कुछ बनता जा रहा है। जल संरक्षण, वर्षा जल संरक्षण एवं वृक्षारोपण का काम बड़े पैमाने पर करना होगा। कानून बने हैं मगर सही ढंग से लागू नहीं होते। कथनी करनी का अंतर बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार का इतना फैलाव हो गया है कि सेवा करने के लिए भी पैसे देकर प्रोजेक्ट लेने पड़ते हैं। महिलाओं के प्रति हिंसा बढ़ रही है। महिलाओं के रोजगार का बड़ा सवाल सामने है। घर में ही रोजगार मिले जिससे महिला परिवार की महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई को मूल्य परक वातावरण दे सके और स्वावलम्बी भी बन सके। पानी के परम्परागत स्रोतों का संरक्षण, संवर्द्धन किया जाए। कूड़े से कंचन बनाना है। नशामुक्ति, शिक्षा, जड़ी-बूटी का उत्पादन एवं ज्ञान, हस्तकला, पनचक्की (घराट) को बढ़ाना है। एन.जी.ओ. को हेय भाव से देखा जा रहा है। उससे मुक्त होने के लिए संगठनों को पारदर्शिता, ईमानदारी व जनता की भागीदारी जोड़कर काम करना चाहिए। आंगनवाड़ी, बालविकास की जरूरत है क्योंकि कुपोषण बढ़ रहा है। पर्यावरण की सुरक्षा

व जागरूकता आज अत्यन्त जरूरी हो गई है, मानसिकता बदलने की जरूरत है। ऐसे अनेक सवाल व मुद्दे बैठक में उठाए गए जिनके सन्दर्भ में एक स्वस्थ संवाद का क्रम चला।

हमें अपना मिशन, अपने काम का लक्ष्य व दृष्टि साफ करनी होगी। काम में संकल्प, ईमानदारी, सच्चाई, पारदर्शिता बरतनी होगी। रचनात्मक कार्यों के लिए गांधीजी ने हर गांव में एक ऐसे स्वयं सेवक की जरूरत महसूस की थी जो उनको स्वराज्य लाने में सहायक हो सके। ऐसे कार्यकर्ताओं के निर्माण के लिए उनके कौशल व विचार को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण की जरूरत है। साधन और साध्य की शुद्धता पर विशेष ख्याल रखना है। सीमित साधनों से काम करने की कुशलता बढ़ानी होगी। संस्था माध्यम है, लोक शक्ति को खड़ा करना हमारा काम है जब लोग खड़े हो जाते हैं, तब काम अपने-आप आगे बढ़ जाता है। लोगों में हमसे बेहतर ज्ञान है, बेहतर अनुभव है, बेहतर जानकारी है। इस मान्यता को साथ रखकर काम करना व आगे बढ़ना है। रचना और संघर्ष को साथ-साथ चलाना है। रचनात्मक, अहिंसक संघर्ष ही हमारा रास्ता है। अन्याय का विरोध निडरता से करना है। व्यवस्था आड़े आती है, इसे ठीक करने के लिए एकजुट होकर कदम उठाने व बढ़ाने होंगे। हम जवाबदारी से मुंह नहीं मोड़ सकते। यह सब बातें रखते हुए सुश्री राधा भट्ट ने अपने जम्मू दौरे के अनुभवों को भी साझा किया।

26 अप्रैल, 2010 को मुख्यमंत्री के सलाहकार श्री मुबारक गुल के साथ बैठक आयोजित हुई। बैठक में स्व. निर्मला दीदी देशपांडे के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। उनके कार्यों व विचारों को याद करते हुए आशा जताई गई कि भविष्य में भी यह परम्परा जारी रखी जायेगी। गांधीजी एवं शेरे-कश्मीर शेख साहब के संबंधों को याद दिलाते हुए गांधीजी के जम्मू-कश्मीर प्रेम का वर्णन किया गया। इस अवसर पर मादरे मेहरबान श्रीमती शेख अब्दुला को याद किया गया। गांधी के रास्ते पर हमें आगे बढ़ना है। स्व. निर्मला दीदी के बाद हमारा मिशन कमजोर पड़ा है। दीदी के साथ काम करने वाले साथी श्री शिवनाथजी को भी बैठक में विशेष याद किया गया। उनकी निडरता, सेवा, भावना, हरदम दीदी के साथ चलने की इच्छा को याद करते हुए उनके असामयिक अवसान पर दुःख जताया गया।

हमें नया जम्मू कश्मीर बनाना है। नया हिन्दुस्तान बनाना है। शांति की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना है। गांधी का संदेश घर-घर पहुंचाना है। अमीर की

ताकत पैसा है मगर जनता की ताकत एकता है। हमें एकता के दम पर आगे बढ़ना है। खून-खराबा, हिंसा, नफरत, द्वेष व अलगाव को मिटाना है। ऐसा उदात्त संदेश देते हुए सुश्री राधा भट्ट ने जनाब श्री मुबारक गुल को गांधी सेवा मैडल पहनाकर सम्मानित किया। श्री मुबारक गुल ने अपनी ओर से शांति व अहिंसा के गांधी विचार को हर तरह से समर्थन देने का आश्वासन दिया।

श्री एस.पी. वर्माजी ने जम्मू-कश्मीर के सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय व सदभाव रखने वाले, समझदार एवं सक्रिय व्यक्तियों को जोड़ने का अच्छा काम किया है। एका बनाया है। शांति-अमन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सभी कार्यकर्ता साथियों को जोड़ रहे हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है, इसके लिए श्री एस.पी. वर्माजी को हम सबने बधाई देते हुए, इस कार्य को और भी बढ़ाते रहने का अनुरोध किया।

जम्मू विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री वरुण साहनी के साथ मुलाकात में गांधी एवं शांति शोध केन्द्र ऊधमपुर, गांधी पाठ्यक्रम, सीमा क्षेत्रों में गांधी शांति कार्य, साम्प्रदायिकता का खतरा, छात्र संघ, टेकिंग गांधी टू स्कूल्ज़, शांति व अहिंसा के विचार के साथ आवाम के साथ रिश्ता बनाना, गांधी विचार विभाग, गांधी विचार शिविर, विश्वविद्यालय में गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र चलाने आदि के बारे में चर्चा हुई। उपकुलपति महोदय ने कहा कि गांधी विचार को कालेजों व विभागों में ले जाने में हम खुशी से सहयोग करना चाहेंगे।

जम्मू विश्वविद्यालय के गांधियन सेंटर फार पीस एंड कान्फलिक्ट रिजोल्यूशन स्टडीज़ की ओर से छात्रों की एक बैठक वरिष्ठ पत्रकार एवं निदेशक, इन्स्टीट्यूट ऑफ जम्मू एंड कश्मीर अफेयर्स श्री बलराजपुरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। श्री बलराजपुरी ने अध्यक्षीय भाषण करते हुए कहा "गांधी की अहिंसा का रास्ता बहुत ही बहादुर लोगों का रास्ता है। हिंसक विरोध कायरता है। अहिंसा के माध्यम से ही युवा अपने लक्ष्यों को सही ढंग से प्राप्त कर सकते हैं। अहिंसा ही लम्बे समय तक चल सकेगी। गांधीजी को लोगों के फैसले पर विश्वास था। श्री पुरीजी ने पंजाब में शांति पहल की याद की और पश्चिम बंगाल गांधी शांति प्रतिष्ठान एवं अन्य गांधी संस्थाओं के द्वारा दिगहा से कलकत्ता तक निकाली गई साईकिल शांति यात्रा की भी चर्चा की। हिंसा से प्रतिहिंसा बढ़ती है। विभाजन के उस अंधेरे काल में भी गांधीजी को "कश्मीर में आशा की किरण" नजर आई थी क्योंकि यहां हिन्दू व मुसलमानों के बीच

प्रेमभाव कायम रहा था। इसे हमें हरदम याद रखना है। आत्मविश्वास रखें, आगे बढ़े। गांधी नाम ने ही मुझे भी शक्ति दी है।"

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए सुश्री राधा भट्ट ने युवा समूह को गांधीजी की जवानी के दिनों की याद दिलाई। उन्होंने कहा, आप लोगों की तरह आपकी ही उम्र में गांधी अपने "कैरियर" को बनाने व धन कमाने के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे। उनके सामने भी परिवार के पोषण व अर्थव्यवस्था संभालने की जिम्मेवारी थी किन्तु इसके नीचे उन्होंने अपना स्वाभिमान और अन्याय का प्रतिकार करने का, सच्चाई के लिए आवाज उठाने का अपना नागरिक कर्त्तव्य दबा नहीं दिया था। विशेषकर दक्षिण अफ्रीका की घटना को पेश किया। गांधी के पास प्रथम दर्जे की टिकट होते हुए भी उन्हें केवल काले रंग का व्यक्ति होने के कारण ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था।

इससे गांधी के भीतर न्याय के लिए जूझने का जो तत्व था वह जाग उठा और उनके जीवन में किसे प्राथमिकता दी जाए, इसके लिए वह एक बड़ा कारण बन गया। आज के युवा गांधी से यही एक प्रेरणा लें तो उनके जीवन में एक सार्थकता से परिपूर्ण उत्साह आयेगा, उन्होंने शांति के लिए कैसे प्रत्यक्ष कार्य किया जाय, इस संदर्भ में मराड, केरल में हुए शांति प्रयासों को याद किया और उन्होंने जिस तरह शांति समूह बनाये, शांति-पहल की और एक भयंकर रक्तपात को होने से पहले ही रोक दिया इसकी जानकारी दी। ग्लोबलाईजेशन के संबंध में पूछे गये सवाल के जवाब की बात करते हुए गांधी और गांव को समझने, जानने, अपनाने की बात कही। मॉस प्रोडक्शन करने के बजाय प्रोडक्शन बाई मॉसिज (जन-जन द्वारा उत्पादन) होना चाहिए। उत्पादन की प्रक्रिया में ज्यादा लोगों को शामिल करके ही समानता पूर्ण विकास आ सकता है। भारत का संदेश यानि गांधी का संदेश हमें दुनियां को एक्शन के द्वारा देना है।

गांधी शांति प्रतिष्ठान के तत्व प्रचार केन्द्रों के समन्वयक, श्री रमेश शर्मा ने अपने ओजस्वी गीत में सभी की भागीदारी सुनिश्चित कराकर एक माहौल बनाया। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे गांधी की राह पर चलकर राष्ट्र निर्माण, नये समाज के सपने को साकार करने में योगदान करें। यह युवा ही कर सकता है। युवा अपने में बदलाव लाएगा तो पूरी दुनिया में ही बदलाव की राह खुल जायेगी। दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। युवाओं ने ही दुनिया में बदलाव की राहें खोली हैं। "तू खुद तो बदल, तू खुद को बदल तब तो यह जमाना बदलेगा।"

कार्यक्रम का सफल संचालन राजनीति शास्त्र विभाग की डा. एलोरा पुरी ने किया। कार्यक्रम में छात्रों ने विशेष रुचि दिखाई, सजग संवाद स्थापित किया व उन्हें मिले उत्तरों से उन्हें संतुष्टि भी हुई।

व्यक्तिगत स्तर पर भी अनेक लोगों से अलग-अलग स्थानों पर बातचीत हुई। जम्मू-कश्मीर की स्थिति जानने-समझने तथा अपनी बात कहने का यह भी एक अच्छा माध्यम सिद्ध हुआ। स्थानीय आयोजकों की सक्रियता, मेहनत, प्रबंधन के कारण ही यह प्रवास शानदार ढंग से सम्पन्नता की ओर बढ़ा।

दिल्ली वापसी के लिए जब हम जम्मू से चलने लगे तो पहले श्री एस.पी. वर्माजी के घर पर, फिर सिटी पैलेस पर विदाई समारोह बहुत ही आत्मीय व गौरवपूर्ण ढंग से हुआ और गांधी ग्लोबल फैमिली, जे. एंड के. की पूरी टीम हमें विदाई देने के लिए स्टेशन तक साथ आई। स्टेशन पर आकर जानकारी प्राप्त हुई कि राजधानी एक्सप्रेस विलम्ब से जाएगी। स्थानीय मित्रों से अनेक बार अनुरोध किया गया कि अब वे इतनी देर तक न रुकें, वरन् वापस लौट जायें मगर सभी साथी ट्रेन चलने तक जम्मू स्टेशन पर साथ रहे। उन्होंने जम्मू स्टेशन को "महात्मा गांधी अमर रहे", "हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, आपस में सब भाई-भाई" "भारत माता की जय" के नारों से गूंजा दिया। इस यात्रा में यह भी अच्छा लगा कि सभी जगह मुख्य रूप से ये तीन नारे ही गूंजे। इसका श्रेय भी हमारी यात्रा के संयोजक श्री एस.पी. वर्मा एवं उनकी टीम को जाता है। उन्होंने ही तय किया कि यही नारे गूंजेंगे, इन्हीं नारों को लगाया जाएगा।

इस प्रकार 27 अप्रैल को हम एक नई आशा, उत्साह व प्रेम से सराबोर होकर दिल्ली पहुंचे। जम्मू कश्मीर में अपनी यात्राओं की शृंखला में यह एक मजबूत कड़ी और जुड़ गई।

THE MANDATE

gd No. JK-307 VOL VI ISSUE NO. 115 DAILY NEWS PAPER JAMMU, MONDAY APRIL 26, 2010 Pages 08 Price Rs. 2/-

Mass Movement to propagate Gandhian philosophy in State: Bhat

स्टेट टाइम्स

शान्ति, साम्प्रदायिक सद्भावना एवं समृद्धि के लिए गांधीवादी आदर्श अपनाना जरूरी: वोहरा

KASHMIR TIMES, JAMMU
Tuesday, April 20, 2010

Radha Bhat visits Jammu

KT NEWS SERVICE

JAMMU, Apr 19: Chairperson Gandhi Peace Foundation, Radha Bhat, is visiting Jammu ... Foundation, Ramesh Sharma also accompanying her. ... President Gandhi Global Family, Jammu ... informed that Radha Bhat soon after arrival would visit Dewan-e-Aam, Mubarak Mandi ... to father of the nation and later attend a function organised by JK Scouts at Trikuta College of Education.

It was apprised that Bhat would also conduct ... districts of Rajouri and Poonch.

THE SHADOW
JAMMU, Monday, April 26, 2010

GPF for adopting Gandhian Principles

Director GCPCS receives Gandhi Youth medal

Audience attending the programme organised by Gandhian Centre for Peace and Conflicted studies JU

Early Times/Joginder Mehra

जम्मू, 25 अप्रैल 2010

दैनिक जागरण

शिक्षण संस्थानों में फैलाएं बापू की विचारधारा : वोहरा

जम्मू, जागरण संवाददाता : राज्यपाल एनएन वोहरा ने महात्मा गांधी की अहिंसा और सहनशीलता की विचारधारा को शिक्षण संस्थानों में फैलाए जाने पर जोर दिया है।

उन्होंने मौजूदा दौर में गांधी की विचारधारा को और प्रासंगिक करार देते हुए कहा कि युवाओं को राष्ट्रपिता की विचारधारा के प्रति जागरूक होना चाहिए। राजभवन में गांधी पीस फाउंडेशन नई दिल्ली के 13 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत में वोहरा ने कहा कि देश की एकता, अखंडता और सांप्रदायिक सौहार्द के लिए गांधी के मूल्यों को और बढ़ावा दिया जाना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि गांधी की विचारधारा के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए 2 अक्टूबर और 30 जनवरी को ही नहीं, बल्कि वर्ष भर कैलेंडर बनाकर गतिविधियां आयोजित की जानी चाहिए। फाउंडेशन की चेयरपर्सन राधा भट्ट ने राज्यपाल को महात्मा गांधी ... और हाथ का बना एक शॉल भेंट किया ... फाउंडेशन की गतिविधियों के बारे में ... जानकारी दी। इस मौके पर गांधियन ग्लोबल फैमली जम्मू-कश्मीर ... शर्मा भी मौजूद थे।

- गांधी पीस फाउंडेशन के प्रतिनिधिमंडल ने की गवर्नर से भेंट

JOURNEY LINE, Jammu

Monday, April 26, 2010

Mass Movement to propagate Gandhian philosophy in State: Bhat

JL NEWS SERVICE

JAMMU, APRIL 25 (INFO)- Gandhi Peace Foundation in collaboration with Gandhi Global Family J&K will jointly launch mass movement to propagate Gandhian thought and philosophy to promote peace and awareness about preserving environment in the state, this was stated by Sushri Radha Bhat, Chairperson Gandhi Peace Foundation, New Delhi in a press conference here today.

She said that Gandhi ji's ... mote his thoughts for strengthening peace process.

Sushri Bhat also emphasised the need for promotion of environment by preserving and making judicious use of our natural ... and gave all details of drive to strengthen the peace process.

Mr. Romesh Sharma, National Coordinator Gandhi Peace Foundation, New Delhi and Dr. Ashwani Jogra, Spokesman Gandhi Global Family, Mr Madan Ch...

... journey in the Train on first ... famous Gandhian S.P. Verma, Professor Kulwant kour, Yog Raj Sharma, Dr Raj... yal, Dr Mohd Taj-u-din, Balbir Singh and Vishal ... urma and several other were present form among the students Dalip, Tilak Raj, eebakshi, Pawan, Ajay, uvali, Pratiyogota, Karan, elanjan, Harmeet, Sheetal, andeep, and other's were present.

... को और प्रासंगिक करार ... कि युवाओं को राष्ट्रपिता के प्रति जागरूक होना चाहिए ... में गांधी पीस फाउंडेशन ... 13 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ... चीत में वोहरा ने कहा कि ... ता, अखंडता और सांप्रदायिक ... के लिए गांधी के मूल्यों को ...

पंजाब केसरी
www.punjabkesari.in
Jammu 26 April 2010

MONDAY EARLY TIMES, JAMMU
APRIL 26, 2010

Gandhian Philosophy ... even today: Radh...

ET TIMES REPORT

JAMMU, Apr 25: Chairperson, Gandhi Peace Foundation, New Delhi, Radha Bhat today asserted that Gandhian philosophy was relevant even today in 21st century. Talking to media persons here today, Bhat who is on 6-day visit to Jammu with a mission of 'Peace and Environment' said, "Gandhian Philosophy is most progressive philosophy even today and its lesson of non-violence and self-reliance has been accepted ... world" ... and lesson which he had propagated to the world".

Commenting over the terrorism and Naxalism, the chairperson said, "Unrest in India due to terrorism and naxalism was the result of our deviation from Gandhian Philosophy".

"Had we addressed the problems of 'Adivasi' or people of backward areas in the way, brought development in backward areas, there would be no Naxalism problem in India', she admitted.

Bhat said that she visited Rajouri Poonch, Jammu ... met people, Governor ... DGP J&K ...

KASHMIR TIMES, JAMMU
Monday April 26, 2010

Mass Movement to propaga... Gandhian philosophy in Sta...